इकाई 10 निरीश्वरवाद एवं अज्ञेयवाद की चुनौतियां

रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 परिचय

10.2 निरीश्वरवाद और अज्ञेयवाद की परिभाषाएँ

10.3 निरीश्वरवाद और अज्ञेयवाद के रूप

10.4 निरीश्वरवाद और अज्ञेयवाद के समर्थन में तर्क

10.5 निरीश्वरवाद और अज्ञेयवाद के विरोध में तर्क

10.6 ईश्वर के अस्तित्व की पुष्टि करना

10.7 सारांश

10.8 कुंजी शब्द

10.9 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

10.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

इस इकाई का मुख्य उद्देश्य निरीश्वरवाद और अज्ञेयवाद की समस्याओं पर चर्चा करना है। ये दो ऐसे दार्शनिक मत हैं जो ईश्वर के अस्तित्व को नकारते हैं। इन दोनों सिद्धान्तों को परिभाषित करने और उनमें अन्तर करने के साथ ही इस इकाई में निरीश्वरवाद और अज्ञेयवाद के विभिन्न प्रकारों की भी चर्चा की गई है। इकाई में यह भी बताया गया है कि किस प्रकार इन दोनों मतों के समर्थक ईश्वर के अस्तित्व के न होने और ईश्वर के अस्तित्व के बारे में कोई निश्चित जानकारी न होने के लिए तर्क करते हैं। अगले अनुभाग में, हम निरीश्वरवाद और अज्ञेयवाद दोनों मतों के विरूद्ध तर्क प्रस्तुत करके उनकी गहन छानबीन करेंगे। इस क्रम में निरीश्वरवाद के ईश्वर के न होने के संदर्भ में उसके स्वाभाविक अन्तर विरोध को दिखाया जाएगा और अज्ञेयवाद की आलोचना मानव मन की निश्चित ज्ञान को प्राप्त करने की

* जॉय कचप्पिल्ली, सेक्रेड हेड महाविद्यालय, शिलोंग।
अनुवाद– डॉ. कुमकुम चतुर्वेदी।

असमर्थता सम्बंधी तर्क को असंगतताओं को इंगित करके की जाएगी। निरीश्वरवाद और अज्ञेयवाद दोनों की अस्वीकार्यता की पड़ताल करने के बाद अनुभाग छः में ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करने के संभावित तरीकों के बारे में बताया गया है। शेष अनुभागों में विद्यार्थियों को इकाई कि विषयवस्तु की बेहतर समझ प्राप्त करने में सहायता मिलेगी। कुल मिलाकर इस इकाई को पढ़ने से विद्यार्थी दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में ईश्वर के अस्तित्व की समस्या पर विचार कर पाएंगे। अतः इस इकाई को पढ़ने के बाद विद्यार्थीः

- निरीश्वरवाद और अज्ञेयवाद दोनों के बारे में मूल जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार के निरीश्वरवाद और अज्ञेयवाद की जानकारी कर सकेंगे;
- ईश्वर के अस्तित्व की स्वीकार्यता की समस्या के संदर्भ में निरीश्वरवाद और अज्ञेयवाद दोनों की स्थिति को समझ सकेंगेः
- इन सिद्धान्तों की कमियों को समझ पाएंगे और
- ईश्वर के अस्तित्व का संभवतः समर्थन करने लगेंगे।

10.1 परिचय

धर्म का दर्शन धर्म पर दार्शनिक ढंग से दार्शनिक चिंतन या विचार करना है। इसमें धर्म की उत्पत्ति, प्रकृति और कार्य के बारे में विचार किया जाता है, इसमें ईश्वर के अस्तित्व, प्रकृति और गुणों से संबन्धित मूलभूत समस्याओं के बारे में भी विचार किया जाता है। ईश्वर के अस्तित्व की पुष्टि का प्रश्न दर्शन के सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक है। प्राचीन काल से ही ईश्वर के अस्तित्व के बारे में कुछ अविश्वास दार्शनिकों में देखा गया है। प्रत्येक धर्म यह मानता है कि मानव की गरिमा का मूल कारण मनुष्य द्वारा ईश्वर के अस्तित्व को मानने की क्षमता और ईश्वर के साथ संवाद करने की उनकी क्षमता में निहित है। मनुष्य अपनी उत्पत्ति के समय से ही ईश्वर के संपर्क के लिए तत्पर रहता है। क्योंकि मनुष्यों की यदि ईश्वर ने प्रेम से रचना न की होती और निरंतर उनको संरक्षण न दिया होता तो मनुष्य का अस्तित्व ही नहीं होता और वे तब तक सत्य के अनुसार पूर्ण रूप से नहीं जी सकते हैं जब तक वे उस प्रेम को पूर्णतः स्वीकार नहीं कर लेते हैं और स्वयं को अपने सृजक के लिए समर्पित नहीं कर देते हैं। लेकिन फिर भी दुर्भाग्यवश हमारे अनेक समकालीनों ने कभी ईश्वर के साथ इस घनिष्ठ और प्रमुख कड़ी को नहीं समझा है, अथवा उसे स्पष्ट रूप से नकार दिया है। अतः निरीश्वरवाद और अज्ञेयवाद दोनों को धर्म के दर्शन की सबसे गंभीर समस्या/प्रश्न माना जाना चाहिए और इसलिए इनकी गहन पड़ताल होनी चाहिए।

10.2 निरीश्वरवाद और अज्ञेयवाद की परिभाषाएँ

निरीश्वरवाद विचारधारा का वह तंत्र है जो औपचारिक रूप से ईश्वरवाद का विरोधी है। यह वह सिद्धान्त या मान्यता है कि ईश्वर नहीं है। नास्तिक वह व्यक्ति होता है जो ये नहीं मानता है कि देवी–देवता होते हैं। निरीश्वर शब्द की उत्पत्ति ईश्वर के नहीं होने से है, जिसका उपयोग किसी भी ऐसे व्यक्ति के लिए किया जाता है जिसके बारे में ये माना जाता है कि उसका मान्य देवी देवताओं में विश्वास नहीं है अथवा जो मिथ्या देवी देवताओं को मानते हैं या किसी ऐसे देवता या सिद्धान्त को मानते हैं जो स्थापित धर्मों के विरोध में है। निरीश्वरवाद शब्द के पहली बार उपयोग में आने के समय से ही इसका उपयोग आमक रूप से सामान्यतः आज प्रचलित देवी देवताओं पर प्रश्नचिन्ह लगाने वाले किसी तंत्र के विरोध में मुखर लोगों के लिए किया जाता है। अतः जहां सुकरात को एथेन्स में लोक अधिकारियों द्वारा निरीश्वरवादी / नास्तिक करार दिया गया और डायगोरास को सिसेरो द्वारा नास्तिक कहा गया, डेमोक्रिटस और एपीक्यूरस को इसी अर्थ में अधर्मी (ईश्वर के लिए सम्मान न रखने वाला) माना गया क्योंकि उन्होंने अपना नया परमाणुवादी दर्शन प्रस्तुत किया था। इस अर्थ में आरंभिक ईसाईयों को यूनानियों द्वारा नास्तिकवादी माना जाता था. क्योंकि उन्होंने उनके ईश्वर को नकार दिया था और इसी कारण उन्हें नास्तिक करार दिया गया। जबकि वर्तमान शब्द 'निरीश्वरवाद' ईश्वरवाद के खण्डन यानि ईश्वर के अस्तित्व को नकारने के लिए प्रयुक्त होता है।

अज्ञेयवाद को मनुष्य की ईश्वर के ज्ञान के बारे में सोच के रूप में देखा जा सकता है, जिसके अनुसार ईश्वर मनुष्य के लिए अज्ञेय है। अज्ञेयवाद के लिए अंग्रेजी शब्द एग्नास्टिसिज्म ग्रीक शब्द एग्नास्टोस से बना है, जिसका अर्थ है अज्ञेय या फिर 'अज्ञानता का व्यवसाय' इस शब्द का उपयोग सबसे पहले टी.एच. हक्सले में 1869 में किसी भी ऐसे व्यक्ति को संबोधित करने के लिए किया था जो मनुष्य के असांसारिक वास्तविकता के ज्ञान, विशेषरूप से ईश्वर के अस्तित्व और प्रकृति का खण्डन करता है। अज्ञेयवादी निरीश्वरवादी नहीं होता है। निरीश्वरवादी ईश्वर के अस्तित्व को नकारता है। जबकि एक अशेयवादी उसके अस्तितव के बारे में अज्ञानता को प्रदर्शित करता है।

जो विचारक निरीश्वरवादी और अज्ञेयवादी दोनों परंपराओं के समर्थक हैं वो ये मानते है कि यद्यपि हम ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध नहीं कर सकते हैं लेकिन हम उनके अस्तित्व का खण्डन भी नहीं कर सकते हैं। अनेक दार्शनिकों का मानना है कि एक सर्वशक्तिमान सर्वज्ञ कृ पालु ईश्वर के अस्तित्व को अशुभ और दुःख अस्तित्व द्वारा नकारा जा सकता है। निसंदेह, सृजक ईश्वर का अस्तित्व खण्डन योग्य नहीं है और निरीश्वरवाद और अज्ञोयवाद दोनों को इसके लिए केवल अशुभ मात्र के अस्तित्व से परे तर्क देने होंगे।

10.3 निरीश्वरवाद और अज्ञेयवाद के रूप

निरीश्वरवाद के विभिन्न रूप है। इसका सबसे प्रबल रूप किसी अध्यात्मिक गैर–सांसारिक प्रथम कारक का सकारात्मक और सिद्धान्तवादी खन्डन है। इसे कभी–कभी सिद्धान्तवादी या सकारात्मक सैद्धान्तिक निरीश्वरवाद भी कहते हैं। इसमें संदेह है कि ऐसे तंत्र को कैसे गंभीरता से बनाए रखा जा सकता है। फिर भी, हम भौतिकतावादी दर्शन की कुछ उन्नत प्रावस्थाओं पर विचार कर सकते हैं। भौतिकवादी दर्शन पदार्थ के अपने स्वयं के कारण और व्याख्या प्राप्त करने का प्रयास करता है और सकारात्मक रूप से किसी अलौकिक कारण के अस्तित्व को नकार देता है। निरीश्वरवाद का दूसरा रूप या तो ईश्वरवाद के भौतिक आंकड़ों की कमी पर अथवा मनुष्य की बुद्धि की सीमित प्रकृति पर आधारित है। ये दूसरा रूप नकारात्मक सैद्धान्तिक निरीश्वरवाद के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

तीसरा रूप सकारात्मक नैतिक निरीश्वरवाद है, जिसमें मनुष्य के कार्य ईश्वर के संदर्भ में न तो सही और न ही गलत, न अच्छे और न बुरे होते हैं। नकारात्मक व्यावहारिक अथवा नैतिक निरीश्वरवाद के एक अन्य रूप में ये माना जाता है कि मानवीय बुद्धि किसी गैर–सांसारिक, आध्यात्मिक और व्यक्तिगत विधाता से संबन्ध स्थापित करने में अक्षम होती है। फिर भी तीसरे प्रकार का नैतिक निरीश्वरवाद आचरण में ईश्वरहीनता की बात करता है, जो दर्शन अथवा नैतिकता अथवा धार्मिक विश्वास के किसी भी सिद्धान्त से अलग है। इन सभी प्रकार के निरीश्वरवाद को एक साथ मिलाकर दो शीर्षकों में रखा जा सकता है। प्रबल निरीश्वरवाद और निर्बल निरीश्वरवाद

इसी प्रकार हम विभिन्न प्रकार के अज्ञेयवाद की बात कर सकते हैं। ऐसे लोग भी हैं जो इसका खण्डन करते हैं कि तर्क से ईश्वर को जाना जा सकता है और उसके अस्तित्व से संबन्धित कोई निर्णय लिया जा सकता है। अज्ञेयवादियों का दूसरा समूह इसका खण्डन करता है कि तर्क से ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध किया जा सकता है लेकिन फिर भी ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास को स्वीकार करता है। इमानुएल काण्ट इसी प्रकार के अज्ञेयवादी थे। अज्ञेयवादियों का एक अन्य समूह है जो अपनी दार्शनिक प्रतिबद्धताओं के कारण ईश्वर को जानने की संभावना का खण्डन करता है। इनमें से कुछ दार्शनिक प्रतिबद्धताएं नामरूपवाद, अनुभववाद, काण्टवाद तार्किक प्रत्यक्षवाद और अस्तित्ववाद है। इन दार्शनिक मतों ने विभिन्न प्रकार के अज्ञेयवाद को जन्म दिया है और इन्हें नामरूपवादी, प्रत्यक्षवादी, अस्तित्ववादी आदि कहा जाता है।

बोध प्रश्न I

ध्यातव्यः क) अपने उत्तर के लिए दिए नीचे गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1. निरीश्वरवाद और अज्ञेयवाद दोनों को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

10.4 निरीश्वरवाद और अज्ञेयवाद के समर्थन में

जब हम निरीश्वरवाद की चर्चा करते हैं तो हम विभिन्न दार्शनिकों द्वारा प्रस्तुत किए गए। नास्तिकवादी तर्कों पर विचार करते हैं। ये तर्क ईश्वर के अस्तित्व को नकारने के लिए दिए जाते हैं। अशुभ (कभी–कभी इसे अशुभ की समस्या कहा जाता है) के लिए तर्क ऐसे तकों में से सबसे प्रचलित है लेकिन ये ही एकमात्र तर्क नहीं है। वस्तुतः 1990 के दशक में दार्शनिकों ने अनेक झकझोरने वाले नास्तिकवादी तर्क प्रस्तुत किए। नास्तिकवादी तर्क दो प्रकार के हैं, तार्किक तर्क और प्रामाणिक तर्क तार्किक तर्क ये दर्शाता है कि ईश्वर की अवधारणा स्वतः विरोधी और कुछ ज्ञात तथ्यों से असंगत है। ये तर्क ईश्वर की अवधारणा में विरोध प्रदर्शित करते हैं। यदि इस प्रकार के तर्क सफल होते हैं तो इसका अर्थ ये होगा कि ईश्वर का अस्तित्व है। अतः उदाहरण के लिए डान वार्कर ने 1997 में ईश्वर के अस्तित्व के न होने के लिए इच्छा स्वतन्त्र का तर्क दिया। उन्होंने तर्क दिया कि दो पारंपरिक दिव्य गुण जैसे, दैविक स्वतंत्रता और दैविक पूर्वज्ञान एम दूसरे से असंगत होते हैं।

प्रामाणिक तर्क यह दर्शाते हैं कि कुछ ज्ञात तथ्य जो ईश्वरवाद के साथ संगत हैं, वे ही उसके विरुद्ध प्रमाण प्रदान करते हैं। इस प्रकार के तर्क ज्ञात तथ्य से शुरू होते हैं, जैसे कि दुनिया में कष्टों की मात्रा। फिर तर्क ये दर्शाने का प्रयास करते हैं कि यह तथ्य ईश्वरवाद की अपेक्षा निरीश्वरवाद की परिकल्पना का समर्थन करता है। क्योंकि हमारे पास इस तथ्य को मानने के अधिक कारण है कि ईश्वर नहीं है बजाय इसके कि ईश्वर का अस्तित्व है। समान रूप से विचारति तथ्य के इस पूर्वानुमान को सिद्ध करने की अधिक संभावना है कि निरीश्वरवाद सत्य है बजाय इस पूर्वानुसार के कि ईश्वरवाद सत्य है, और इस प्रकार, यह तथ्य निरीश्वरवाद के पक्ष में और ईश्वरवाद के विरोध में कुछ प्रमाण देता है। इन तथ्यों को मिलाने पर, आप निरीश्वरवाद के लिए संचित आधार बना सकते हैं।

अज्ञेयवाद के संदर्भ में, विभिन्न दार्शनिक मतों जैसे नामरूपवाद, अनुभववाद, काण्टवाद, तार्किक प्रत्यक्षवाद और अस्तित्ववाद पर विचार करने पर इनके समर्थकों ने यह मत प्रचारित किया कि हम ईश्वर के अस्तित्व के बारे में ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

अतः नामवाद ने सामान्यता (universality) का खण्डन किया और इसे शब्द मात्र माना। नामवाद (nominalism) के अनुसार, विश्व में ऐसा कुछ नहीं है जो मानव को उनसे परे किसी ईश्वर की ओर उत्कर्षित करता है। अतः हम ईश्वर को निश्चित तौर पर नहीं जान सकते ऑखेम के विलियम नामवाद के प्रमुख प्रवर्तक है अनुभववाद में माना जाता है कि समस्त ज्ञान अनुभव से आता है और इसलिए अनिवार्यता असंभव है। मानव मन कभी भी निश्चितता को प्राप्त नहीं कर सकता है क्योंकि मानव अनुभव निश्चित प्रकृति के होते हैं। अतः ईश्वर के अस्तित्व के संबन्ध में निश्चित ज्ञान असंभव है। डेविस ह्यूम ने इस मत का समर्थन किया। कांटवाद के संदर्भ में, इमानुएल काण्ट ने *क्रिटिक ऑफ प्योर रीजन* पुस्तक में डेविड धूम द्वारा उठाए गए मानव ज्ञान की अनिवार्यता और सार्वभौमिकता सम्बंधी प्रश्नों का उत्तर देते हुए यह माना है कि मानवीय ज्ञान के लिए संवेदनात्मकता (sensibility) और अवबोध (understanding) दोनों की आवश्यकता होती है। संवेदनात्मकता स्थान और काल दोनों में संभव है जबकि अवबोध के लिए बारह कोटियों की आवश्यकता होती है। ईश्वर को संवेदनात्मक में नहीं रखा जा सकता है क्योंकि वो स्थान और काल के क्षेत्र में नहीं आता है। काण्ट का मानना था कि हमें ईश्वर के बारे में कोई प्रत्यक्ष प्राकृतिक ज्ञान नहीं हो सकता है। जबकि नैतिक आधार पर काण्ट ईश्वर के अस्तित्व को एक पूर्वमान्यता के रूप में स्वीकार करते हैं, लेकिन ईश्वर में ऐसी आस्था को कोई संज्ञानात्मक मूल्य नहीं है और यह उसके वास्तविक अस्तित्व को सिद्ध नहीं करता है।

तार्किक प्रत्यक्षवादियों का मुख्य सिद्धान्त सत्यापन का सिद्धान्त है जो कहता है तर्क वाक्य तभी सत्य है यदि उसमें कही गई बात को किसी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष संवेदी अनुभव के संदर्भ में सत्यापित किया जा सकता है। अतः ऐसे तर्क वाक्य जो किसी अनुभवजन्य विज्ञान पर आधारित हों वे तथ्यपरक होते हैं और उनका सत्यापन किया जा सकता है जबकि औपचारिक तर्कवाक्य, जैसे कि तर्क और गणित के, तभी सत्य होते हैं यदि वे स्वयं में संगत होते हैं। जबकि, ईश्वर के सम्बंध में कथन ना तो तर्कसंगत है और न ही औपचारिक हैं। अतः इनकी पुष्टि नहीं की जा सकती है, ये न तो सत्य और न ही असत्य होते हैं। ये मात्र अर्थहीन छद्म कथन हैं।

अंत में अस्तित्ववाद में यह माना जाता है कि मानव जीवन का सार वही है जो वह अपने लिए अपनी मानवीय संभावनाओं के निश्चित बोध के द्वारा मुक्त रूप से निर्मित करता है। मनुष्य अपने अस्तित्व में मुक्त प्रकृति का होता है। वह स्वयं को वही बना लेता/ लेती है जो वह होता / होती है। यह कहना कि उसका स्थायी और निर्धारित सार रूप होता है उसकी

स्वतंत्रता को छीनना और उसको एक पूर्व निर्धारित रूप में बन्द कर देना है। अस्तित्ववादी प्रवृत्तियों के निरंतर प्रवाह में मनुष्य किसी संकल्पनात्मक ज्ञान द्वारा स्वयं को नहीं जकड़ सकता है। इन्हीं कारणों से, हम निष्कर्षित कर सकते हैं कि अस्तित्ववाद अनिवार्य रूप से अज्ञेयवादी प्रवृत्ति का होता है। इसने मनुष्यों में ईश्वर की किसी औचित्यपूर्ण अथवा संकल्पनात्मक समझ को नकार दिया। यदि कभी किसी परम शक्ति के बारे में कुछ पता भी चला तो इसे ईश्वर नहीं माना जा सकता है।

10.5 निरीश्वरवाद और अज्ञेयवाद के विरोध में तर्क

दार्शनिकों ने विशेषरूप से ईश्वरवादी परंपरा को मानने वाले दार्शनिकों ने निरीश्वरवादियों के मत का खण्डन करने के लिए अनेक तर्क दिए। जैसा कि पहले बताया गया है, निरीश्वरवादी विश्वदर्शन की अनेक भिन्न शाखाएं हैं जबकि मोटे तौर पर हम प्रबल निरीश्वरवाद और निर्बल निरीश्वरवाद की बात कर सकते हैं।

प्रबल निरीश्वरवाद किसी भी रूप में किसी देवी–देवता के अस्तित्व का पूर्ण खण्डन है। इसमें एक विरोधाभास है। एक प्रबल निरीश्वरवादी दिव्यता का खण्डन मनुष्य की दिया क्षमताओं के होने के द्वारा करता है। सामान्य निरीश्वरवादी प्रेक्षण में माना जाता है कि मनुष्य एक निश्चित जीव है और केवल व्यक्तिगत अनुभव और उपयोग द्वारा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। लेकिन ईश्वरवादी मानते हैं कि ज्ञान की प्राप्ति दिव्य प्रकाशना से भी हो सकती है। प्रबल निरीश्वरवादी को न केवल प्रत्येक व्यक्ति के बारे में पूर्ण ज्ञान बल्कि ब्रह्माण्ड की सभी वस्तुओं के बारे में सम्पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्रबल निरीश्वरवादी विश्वदर्शन को चाहे जितने अर्थपूर्ण ढंग से समझाया जाए, वह अव्यावहारिक और अतार्किक है। प्रबल निरीश्वरवादी मत पर डटे रहने के लिए जरूरी है कि व्यक्ति वर्तमान के साथ–साथ भविष्य में सम्भव ज्ञात वैज्ञानिक और दर्शनिक प्रमाणों को भी नकार दे।

जबकि निर्बल निरीश्वरवाद में अधार्मिक मान्यताओं का व्यापक विस्तार शामिल है। प्रारूपिक रूप से, निर्बल निरीश्वरवाद उनके लिए है जो किसी प्रकार के अधार्मिक विश्वमत वाले होते हैं। इसमें विभिन्न कारणों से ईश्वर के अस्तित्व को नकारा जाता है। कुछ का मानना है कि ईश्वर को हम अपनी इंद्रियों के माध्यम से नहीं जान सकते अतः उसका अस्तित्व नहीं है। लेकिन हम जानते हैं कि जो सांस हम लेते हैं, गुरूत्व का बल, भावनाओं, मूल्यों, मान्यताओं और विचारों को देखा, सुना, सूंघा, छुआ, अथवा उनका स्वाद नहीं लिया जा सकता है। फिर भी ये सब उपस्थित हैं। इसी प्रकार ईश्वर जो कि परमात्मा है उसे हम अपनी इंद्रियों से अनुभव नहीं कर सकते हैं। इसका यह अर्थ नहीं है कि उसका अस्तित्व नहीं है। कुछ निरीश्वरवादी जो भौतिकवाद को मानते हैं, तर्क करते हैं कि पदार्थ और देश बस हैं और सदैव से अस्तित्वमान हैं। लेकिन हम जानते हैं कि शून्यता से कुछ नहीं आ सकता है। चीजें

आकस्मिक रूप से नहीं होती हैं। धार्मिक लोगों के लिए ब्रह्माण्ड और उसकी प्रत्येक वस्तु को ईश्वर ने निर्मित किया है।

इसी प्रकार व्यक्ति नामरूपवाद, अनुभववाद, काण्टवाद, तार्किक प्रत्यक्षवाद और अस्तित्ववाद द्वार प्रस्तावित अज्ञेयवाद का भी खण्डन किया जा सकता है। नामरूपवाद का खण्डन करने के लिए, हम कह सकते हैं कि नामरूपवादी ये समझने में असफल रहे कि जहां प्रत्येक व्यक्ति अपनी तरह का अकेला है, लेकिन बुद्धि में यह शक्ति है कि वह एकल व्यक्ति के किसी एक पहलू पर विचार कर सके और अन्य पर न करे। अतः बुद्धि सर्व धारणाएं प्राप्त कर सकती हैं, और इस प्रकार उसे ईश्वर का ज्ञान हो सकता है। अनुभवादी मानवीय अनुभव की एक आयामी व्याख्या के दोषी हैं। अनुभव को केवल पांचों इंद्रियों द्वारा प्रत्यक्ष अनुभूति तक ही सीमित कर देना मानव अनुभव के बड़े भाग यानि बुद्धि द्वारा प्राप्त अनुभव को पृथक कर देना है। ईश्वर के अस्तित्व को इंद्रियों द्वारा नहीं बल्कि बौद्धिक रूप से जाना जा सकता है। काण्ट यह कहने के दोषी हैं कि मानवीय संवेदनों द्वारा अनुभूति किसी भी चीज को जानने की पहली शर्त है। तार्किक प्रत्यक्षवादी सत्यापन के सिद्धान्त को प्रस्तुत करके अनुभवादियों की भांति मानवीय ज्ञान को सीमित कर देते हैं। अंततः, अस्तित्ववादियों ने दोहरी गलती की है। वे यह जानने में असफल रहे कि सार रूप के बिना सीमित व्यक्ति एक विरोधाभास है क्योंकि प्रत्येक सीमित अस्तित्व सदैव किसी का अस्त्वि है। मानव बिना किसी आन्तरिक सीमा अथवा सार के किसी असीमित अस्तित्व का कार्य होगा। दूसरे, अस्तित्ववादी यह समझने में असफल रहे कि जब तक मनुष्य की स्वतंत्रता बुद्धि में निहित और उस पर निर्भर नहीं होगी, मनुष्य को उन संभावनाओं का पता नहीं चल पाएगा जिनमें से वह चयन कर सकता है। चूंकि सार वह क्षमता है जिसे अस्तित्व द्वारा समझा जा सकता है, अतः ये संभावनाएं वास्तव में गुप्त रूप से पुनः प्रस्तुत सार हैं।

10.6 ईश्वर के अस्तित्व की पुष्टि करना

ईश्वर के अस्तित्व को मानने वाले उसके अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए ही धर्मग्रंथों की ओर अभिमुख होते हैं। जबकि, गैर आस्थावान ये कहते हुए सभी धर्म ग्रंथों के तर्कों को अस्वीकार कर देते हैं कि ईश्वर का स्वतः प्रमाणित होना या उसकी स्वः स्वीकारोक्ति उसके अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त नहीं है। वो तर्क देते हैं कि किसी का स्वयं के बारे में कथन मिथ्या हो सकता है। जबकि यह सत्य है कि यदि अन्य गवाह सहमत हो तो स्वः स्वीकारोक्ति की आज भी किसी भी अदालत में अनुमति है। इसलिए धर्मग्रंथों से इतर तर्कों की आवश्यकता है। इन तर्कों को संक्षेप में यहां बताया गया है, जबकि इनमें से कुछ पर आगामी इकाईयों में विस्तार से बताया जाएगा।

सहजानुभूत तर्क जो सबसे पहले ऑगस्टीन द्वारा प्रस्तुत किया गया था, यह है कि मनुष्य को ईश्वर के अस्तित्व की प्रत्यक्ष सहजानुभूति होती है। यह तर्क दो महत्वपूर्ण तथ्यों पर आधारित है। एक समस्त मानवता सभी इतिहास कालों और सभी संस्कृतियों में असाध्य रूप से धार्मिक रही है। दूसरे, जब व्यक्ति ब्रह्माण्ड की विपुलता और भव्यता को समझने का प्रयास करते हैं तो उन्हें समझ में आता है कि कोई महान बुद्धि और शक्ति निश्चित रूप से ब्रह्माण्ड को संचालित कर रही है।

सत्तामूलक तर्क, जिसे सबसे पहले एन्सेल्म द्वारा प्रस्तुत किया गया था, दावा करता है कि परमात्मा (ईश्वर) का वास्तव में अस्तिव है क्योंकि मनुष्य उसकी कल्पना कर सकता है। एन्सेल्म ने घोषणा की कि ईश्वर वह है जिससे बड़ी किसी सत्ता की कल्पना नहीं की जा सकती है। चूंकि मनुष्य किसी ऐसी चीज की कल्पना नहीं कर सकता, जिसका अस्तित्व नहीं है और चूंकि मनुष्य ईश्वर के विचार की कल्पना कर सकता है, तो ईश्वर का आवश्यक रूप से अस्तित्व है।

नैतिक तर्क यह है कि सभी लोगों में, सही और गलत को जानने की जनमजात क्षमताहोती है। सही को गलत से पहचानने की ये क्षमता ब्रांड के नैतिक शासक के अस्तित्वको इंगित करती है, एक ऐसा नैतिक सृजक जिसकी अच्छाई पूर्ण है। यह नैतिक शासकईश्वर है।

ब्रह्माण्ड विज्ञानी तर्क को थॉमस एक्वीनास ने दिया था, जिसका सरोकार प्रकृति के नियमों से है। इस तर्क का मूल विचार यह है कि विद्यमान ब्रह्माण्ड सृष्टि के रचयिता का एक अकाट्य प्रमाण है। इस विचार का समर्थन करने वाला प्रकृति नियम यह है कि प्रत्येक प्रभाव के लिए कोई पर्याप्त कारण होना चाहिए। चूंकि शून्य से कुछ नहीं आ सकता है। और चूंकि, ब्रह्माण्ड कुछ है, तो इस ब्रह्माण्ड की रचना किसी अज्ञात शक्ति या व्यक्ति ने की है। ब्रांड एक प्रभाव है।

बोध प्रश्न II

ध्यातव्यः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1. प्रबल निरीश्वरवाद चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

10.7 सारांश

इस इकाई में निरीश्वरवाद और अज्ञेयवाद के प्रश्नों पर चर्चा की गई है, ये दो ऐसे दार्शनिक मत है जो ईश्वर के अस्तित्व को नकारते हैं। इसमें इन दोनों सिद्धान्तों को परिभाषित और इन दोनों के बीच अन्तर को समझाया गया है और निरीश्वरवाद तथा अज्ञेयवाद के विभिन्न रूपों को भी बताया गया है। इसके बाद इकाई में यह समझाया गया है कि किस प्रकार इन दोनों मतों के समर्थकों ने ईश्वर का अस्तित्व नहीं होने के समर्थन में और ईश्वर के अस्तित्व के बारे में निश्चित जानकारी न होने की हमारी अक्षमता के बारे में बताया गया है। फिर हमने निरीश्वरवादियों और अज्ञेयवादियों दोनों के मत की गहनता से पड़ताल की है और उनके सहज अंतर्विरोधों और असंगतताओं को बताया है। निरीश्वरवाद और अज्ञेयवाद के द्वारा किये गये खण्डन की पड़ताल करने के बाद, इस इकाई में ईश्वर के अस्तित्व की पृष्टि की गई है। इस प्रकार यह इकाई विद्यार्थी को ईश्वर के अस्तित्व के प्रश्न पर दार्शनिक परिपेक्ष्य से विचार करने का अवसर देती है।

10.8 कुंजी शब्द

अज्ञेयवाद : यह वह सिद्धान्त है कि व्यक्ति किसी के अस्तित्व को उसके अनुभव से परे नहीं जान सकता है। यह वह मान्यता है कि इसका कोई प्रमाण नहीं है कि ईश्वर है या ईश्वर नहीं है।

निरीश्वरवाद : यह ईश्वर अथवा देवताओं के अस्तित्व में अविश्वास अथवा उसका खण्डन है।

अनुभववाद : यह वह मत है कि अनुभव विशेषरूप से इंद्रियों से अनुभवज्ञान का एकमात्र स्रोत है।

अस्तित्ववाद : वह दर्शन है जो विरोधी अथवा मिल ब्रह्माण्ड में व्यक्ति की विशिष्टता और व्यक्तिगत अनुभव के पृथक्करण को महत्व देता है। मानव के अस्तित्व को व्याख्या योग्य नहीं मानता है, और किसी व्यक्ति के लिए चयन की स्वतंत्रता और उसके कर्मों के परिणामों का दायित्व उसी पर डालता है।

काण्टवाद : इसमें ऐसे विभिन्न दर्शन है जो काण्ट के प्रकृतिक की खोज और मानवीय ज्ञान की सीमाओं के प्रति सरोकार से सहमति रखते हुए दर्शन को विज्ञान के स्तर पर पहुंचाने की आशा करते हैं।

तार्किक प्रत्यक्षवाद : तथ्यपूर्ण कथनों के सत्य के मूल्यांकन में प्रेक्षण की प्रमुखता को माना जाता है और यह कहा गया है कि तत्वमीमांसक और विषयीपरक तर्क जो दृश्य आंकड़ों पर आधारित नहीं होते हैं, वे अर्थहीन है।

भौतिकवाद : वह सिद्धान्त है जो यह मानता है कि भौतिक वस्तुएं ही एकमात्र सत्य है और विचार, भावना, मन और इच्छा समेत सभी चीजों को पदार्थ और भौतिक परिघटनाओं के संदर्भ में समझाया जा सकता है।

नामरूपवाद/नामवाद: यह एक विचारधारा है जिसमें यह माना जाता है कि मूर्त अवधारणाएं सामान्य शब्द अथवा सर्वसत्य का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है, बल्कि ये महज नाम के रूप में पाए जाते हैं।

धर्म दर्शन : यह दर्शन की एक शाखा है जिसमें प्रमुख ज्ञानमीमांसीय और ज्ञानशारीय संकल्पनाओं, सिद्धान्तों और धर्म के प्रश्नों का अध्ययन किया जाता है। इसमें विचार किए जाने वाले विषयों में ईश्वर का अस्तित्व और प्रकृति, ईश्वर के ज्ञान की संभावना मानव स्वतंत्रता अमरता और नैतिकता तथा प्राकृतिक बुराई और कष्टों के प्रश्न शामिल है।

10.9 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

- एलिक्जेन्डर समुअल. *स्पेस टाइम एण्ड डीटी.* लंदनः मैकमिलन, 1927.
- फ्लू. ए. और मैक इन्चइर. ए. (एडि.). *फ्यू एसेज इन फिलॉसफिकल थियोलोजी.* लंदनः एससीएम प्रैस, 1955.
- मैनसन, नील ए. (एडि). *गॉड एण्ड डिजाइन.* लंदनः रूटलेज, 2003.
- स्मार्ट, जेजेसी एण्ड जॉन हैल्डेन. *स्थीरम एन्ड थीस्म* (सेक. एडि.). ऑक्सफोर्डः ब्लैकवेल, 2003.
- रचर्डसन, एलन. *रिलीजन इन कंटेपरेरी डिबेट.* लंदनः एससीएन प्रेस लि. 1908.
- फैबो, कोर्नीलियो. *गॉड इन एक्साइल, मॉडर्न एथीएम ए स्टडी ऑफ द इंटरनल डाइनेमिक ऑफ मॉडर्न एथीरम फ्रॉग इट्स सट्स इन द कार्टिसियन कॉजिटो टु द प्रेजेन्ट.* ट्रांस एण्ड एडि. आर्थर गिब्सन, न्यू यार्कः न्यूमेन प्रेस, 1968.
- होलोवे एम.आर. "एग्नोस्टिसिस्म' इन *न्यू कैथेलिक एन्साइक्लोपीडिया* वोल्यू–1, (एडि.) डेविड आई. इगेनबर्गर. वाशिंगटन डीसीः मैक्ग्रॉहिल, 1981, प. 1000–1003.

10.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1. निरीश्वरवाद विचार का वह तंत्र है जो ईश्वरवाद का विरोध करता है। ये एक सिद्धान्त अथवा मान्यता है कि ईश्वर नहीं है। नास्तिक वह व्यक्ति होता है जो ये नहीं मानता है कि देवी देवता पाए जाते हैं। दूसरी तरफ, अज्ञेयवाद को मनुष्य की निरीश्वरवाद और अज्ञेयवाद की समस्या भौतिकवाद ईश्वर के ज्ञान के प्रति सोच के रूप में देखा जा सकता है, जैसे ईश्वर मनुष्य के लिए अज्ञेय है। अज्ञेयवादी निरीश्वरवादी नहीं होता है। निरीश्वरवादी ईश्वर के अस्तित्व को नकारता है, अज्ञेयवादी उसके अस्तित्व के प्रति अज्ञानता को स्वीकार करता है।

बोध प्रश्न II

1. प्रबल निरीश्वरवाद किसी भी रूप में किसी देवी–देवता के अस्तित्व का पूर्ण खण्डन है। इसमें एक विरोधाभास है। एक प्रबल निरीश्वरवादी दिव्यता का खण्डन मनुष्य की दिव्य क्षमताओं के होने के द्वारा करता है। सामान्य निरीश्वरवादी प्रेक्षण में माना जाता है कि मनुष्य एक निश्चित जीव है और केवल व्यक्तिगत अनुभव और उपयोग द्वारा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। लेकिन ईश्वरवादी मानते हैं कि ज्ञान की प्राप्ति दिव्य प्रकाशना से भी हो सकती है। प्रबल निरीश्वरवादी को न केवल प्रत्येक व्यक्ति के बारे में पूर्ण ज्ञान बल्कि ब्रह्माण्ड की सभी वस्तुएओं के बारे में सम्पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्रबल निरीश्वरवादी विश्वदर्शन को चाहे जितने अर्थपूर्ण ढंग से समझाया जाए, वह अव्यवहारिक और अतार्किक है। प्रबल निरीश्वरवादी मत पर डटे रहने के लिए जरूरी है कि व्यक्ति वर्तमान के साथ–साथ भविष्य में सम्भव ज्ञात वैज्ञानिक और दर्शनिक प्रमाणों को भी नकार दे।